IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सर्वहाराक चेता 'यात्री' ओ हुनक काव्य वैशिष्ट्य

1. डा० सुरेन्द्र भारद्वाज, 2. डा. विजयेन्द्र झा

1.वरीय सहायक प्राध्यापक मैथिली विभाग सी० एम०कालेज, दरभंगा, बिहार, भारत

2. पूर्व प्रधानाचार्य, सम्प्रति - अध्यक्ष, मैथिली विभाग, एल. एन. टी. कालेज, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

सारांश :

आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहासमे यात्रीजीक नाम आदरणीय आ' अग्रगण्य अछि। ओ बहुत किछु लिखलनि। बहुविधावादी रचनाकारमे परिगणित छथि, भाव ओ भाषाक दृष्टिएँ अनुपमेय छथि। गद्य होअय वा पद्य, कोनो विधामे ओ मध्यम कोटिक रचना नहि आबय देलनि। से विषयवस्तुक दृष्टिसँ कहल जाय वा भाव प्रवणक दृष्टिसँ। कवि 'यात्री' द्वारा प्रणीत समस्त कविताक वर्ण्य-विषयक विवेचनसँ ई सिद्ध भ' जाइछ जे हुनक साहित्यिक रचना-संसार समसामायिक जनजीवनक चित्रकेँ ठोस रूपेँ अभिव्यक्त करैत अछि। एहिमे प्रखर यथार्थ-बोध, धरती ओ जन-जनक प्रति अनन्य प्रेम, आस्था एवं विश्वाससँ आद्यन्त मण्डित अछि। युगक शोषण, स्वस्थ एवं स्वतंत्र जीवन हेतु संघर्षरत मनुष्यक चित्रण तथा अपन माटि-पानिक गंध, ग्राम्य ओ नागरिक जीवनक विषमताक बीच स्वस्थ-सबल प्रकृति आदि वस्तुतः सामाजिक यथार्थक प्रशस्त संवेदनाक परिचायक थिक। कवि यात्रीक किछु कवितामे निम्नवर्गीय संघर्षशील आम-जनक चेतना सेहो प्रकट भेल अछि। महाजनी चट्टानसँ ठोकर खाइत, भयंकर संघर्षक आगिमे झरकैत सर्वहाराकेँ समर्थन दैत 'यात्री'क कविता साम्राज्यवादी संस्कृतिक विनासक प्रयासकेँ जेना ललकारा दैत अछि। वस्तुतः कवि 'यात्री' अपन काव्य रचना-संसारमे स्वयंकेँ सर्वहारा वर्गक हेतु अनलनि, तेँ ओ सर्वहारेक कवि बनल रहलाह।

बीज-शब्दः सर्वहारा, पूजीपति, साम्यवाद, ठेठ, पुरातन, पाश्चात्य, प्रगतिवाद।

परिचय :

मैथिली साहित्याकाश मध्य आधुनिक मैथिली साहित्यक विपुल भंडारकेँ अपन विविध रचनासँ भरनिहार कवि, उपन्यासकार; संस्कृत, हिन्दी, मैथिली, बंगला भाषाक मर्मज्ञ ओ विशिष्ट विद्वान् वैद्यनाथ मिश्र मैथिलीमे 'यात्री' ओ हिन्दी साहित्यमे 'नागार्जुन' नामे जानल जाइत छथि। अपन व्यंग्य वाणक नोकसँ, कवि-कर्ममे जे नित्यहु लागल रहलाह निधोख भ', समसामयिक घटना, सामाजिक विवादास्पद रीति-कुप्रथा, अंधविश्वासपर जे कटु सत्योद्‌घाटन कयलनि, तकर

निदान हेतु काव्यहिक माध्यमे लोकक बीच जागरण अनलनि, सत्य मात्रक अभिभाषण कयनिहार एहन मैथिल रत्न भेलाह- ’यात्री’।

’यात्री’जी मैथिली साहित्यक समकालिक शीर्षस्थ रचनाकारमे परिगणित छथि आ’ मूलतः कवि-उपन्यासकारहिक कोटिमे प्रतिष्ठित छथि। मुदा अन्य विधामे सेहो हुनक रचना ठाम-ठाम भेटैत अछि। गीत, यात्रा, संस्मरण तथा रिपोर्ताजक अतिरिक्त हुनक किछु स्तम्भ लेखन उपलब्ध अछि। मैथिली साहित्यमे कवि ’यात्री’क पाँच टा प्रकाशित पोथी दृष्टिपथपर अबैछ, जाहिमे ’चित्रा’, ’पत्रहीन नग्न गाछ’ क्रमशः 1949, 1967 इ०मे प्रकाशित कविताक संकलन थिक। ’पत्रहीन नग्न गाछ’पर ’यात्री’कें भारत सरकारक प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था ’साहित्य अकादमी, नई दिल्ली’ द्वारा 1968 इ०मे सम्मानित कयल गेल छनि। श्री ’यात्री’क प्रकाशित मैथिली उपन्यास अछि- ’पारो’, ’नवतुरिया’ आ’ ’बलचनमा’ (हिन्दीसँ अनूदित)।

दरभंगा जिलाक प्रसिद्ध तरौनी गामवासी यात्रीजीक जन्म हुनक मातृक सम्प्रति मधुबनी जिलाक रहिका प्रखंडक अन्तर्गत सतलखा गाममे भेलनि। वैद्यनाथ मिश्र हुनक मूल नाम छनि। हुनक हिन्दीमे प्रमुख प्रकाशित कृतिसभ अछि : युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई आंखें, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, तुमने कहा था, हजार हजार बाहों वाली, पुरानी जूतियों का कोरस, रत्नगर्भा, ऐसे भी हम क्या ! ऐसे भी तुम क्या! (कविता-संग्रह); रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन, कुम्भीपाक, अभिनन्दन, उग्रतारा, इमरतिया (उपन्यास); आसमान में चन्दा तैरे (कहानी संग्रह); भस्मांकुर (हिन्दी खण्ड काव्य); अन्नहीनम् क्रियाहीनम् (निबन्ध-संग्रह); गीत गोविन्द; मेघदूत; विद्यापति के गीत, विद्यापति की कहानियां (अनुवाद) आदि। यात्रीजी यायावरी वा घुमक्कर जीवन शैली बितओलनि। एक बेर मैथिली प्रतिनिधिक रूपमे ओ रूसक भ्रमण कयलनि। नागार्जुन वा वैद्यनाथ मिश्र ’यात्री’कें हिन्दी आ’ मैथिलीक कविक रूपमे 1994 इ०मे साहित्य अकादेमीक फेलोशिप भेटल छनि। यात्रीजी अपन गामक संस्कृत पाठशालामे पढ़ए लगलाह, फेर ओ बनारस आ’ कलकत्ता सेहो गेलाह। ओतय संस्कृतमे ’साहित्याचार्य’क उपाधि प्राप्त कयलनि। पश्चात् ओ कोलम्बोक ’कलनिआ स्थान’ गेलाह आ’ ओतय पाली ओ बौद्ध धर्मक अध्ययन कयलनि। ओतय बौद्धधर्ममे दीक्षित भ’ ’नागार्जुन’ उपनामसँ विभूषित कयल गेलाह। यात्रीजी मार्क्सवादसँ प्रभावित छलाह। 1929 इसबीक दिसम्बर मासमे ओ मैथिलीमे पद्य लिखब आरम्भ कयलनि। एहि संग ओ 1935 इसबीसँ हिन्दीमे सेहो लिखए लगलाह। यात्रीजी 1939 सँ 1941 धरि स्वामी सहजानन्द सरस्वती आ’ राहुल सांकृत्यायनक संग किसान आन्दोलनमे संलग्न रहलाह। एहि क्रममे ओ विभिन्न जेलक यात्रा कयलनि। कहल जाइत अछि जे हुनक बहुतरास रचना जे महात्मा गाँधीक मृत्युक पश्चात् लिखल गेल छल, प्रतिबन्धित क’ देल गेल। भारत-चीन युद्धमे कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा चीनकें देल समर्थनक बाद यात्रीजीक मतभेद कम्युनिस्ट पार्टीसँ भ’ गेलनि; आ’ जे.पी. आन्दोलनमे भाग लेबाक कारणे आपातकालमे ओ जेलमे रहलाह। यात्रीजी बाल साहित्यक सृजन सेहो कयलनि, मुदा हिन्दीमे। विदित अछि जे मैथिलीक दोसर साहित्य अकादमी सम्मान 1968 इसबीमे यात्रीजीकें हुनक दोसर मैथिली कविता संग्रह ’पत्रहीन नग्न गाछ’पर भेटलनि। यात्रीजी जखन 20 वर्षक छलाह तखने 12 वर्षीय कन्यासँ हुनक विवाह भेलनि। अपन अवयस्क-विवाहिताकें पिता लग छोड़ि आगूक शिक्षा लेल वाराणसी गेलाह।

मुख्य विषय :

स्वातन्त्र्योत्तर भारतकेर भाषा-साहित्यक विविध विधामे पाश्चात्य साहित्यक प्रभावसँ नवजागरण आयल। मैथिली साहित्यमे एहन स्थितिक आगमनमे किछु विलम्ब अवश्य भेल, मुदा एहू ठामक रचना-संसारमे देश-दशा, समाज-सुधारक विषयसभ साहित्यक माध्यमसँ आबय लागल। विलम्बेसँ, मुदा मैथिल हित साधन, मिथिला मोदी, मिथिला मिहिर, मैथिली साहित्य-पत्र, मिथिला, मिथिला दर्शन, मिथिला दर्पण, मैथिली दर्पण आदि पत्रिकाक माध्यमसँ एहू ठामक जन-जनमे अपन अस्मिता ओ गौरवक भान कराओल गेल। अनीति ओ अव्यावहारिक विचारक विरोध, मैथिल समाजमे व्याप्त दुर्वृत्ति, आडम्बर, अंधविश्वास, दुराचार आदिक बहुलता जे समाजकेँ भितरे-भीतर गड़ार जकाँ खा' रहल छल; तकर भान उक्त पत्र-पत्रिकासभ समय-समयपर करबैत रहल। मिथिला सुधारक बहन्ने कतोक महत्वपूर्ण विचारसभ तात्कालिक पत्रिकाक विषय बनल। एहने समयमे 'यात्री'क पदार्पण अपन मधुवर्षी लेखनीक संग भेल। ओ अपन माटि पानि, भाषा-साहित्यक केहन प्रेमी छलाह तकर उदाहरण हुनक समकालिक इतिहासकार डा० जयकान्त मिश्र 'चित्रा'क भूमिकामे कहि गेल छथि-

"आइ सँ सोड़ह वर्ष पूर्व जे ई यात्रा आरम्भ कयलन्हि से एखन धरि समाप्त नहि भेल छन्हि, एहि बीच हिन्दु सँ बौद्ध, बौद्ध सँ साम्यवादी, साम्यवादसँ प्रगतिवाद, कतय-कतय ने ई गेलाह परंच हमरासबहिक गौरव अछि जे मिथिलाक प्राचीन, मध्यकालीन वा आधुनिक मिथिलाक माटि-पानिके, बोन बाधके, हर जनके-कोशी लखिमाके नहि विसरि सकलाह।"1"

कवि 'यात्री'क प्रसंग मिश्रजीक उपरोक्त टिप्पणी समीचीन अछि। प्रगतिवादक समर्थक 'यात्री'क अधिकांश कविता जँ मुक्त छन्द, अतुकान्त तथा परम्परासँ हटि क' अछि तँ किछु कविता छन्दोबद्ध, तुकान्त ओ परम्पराक पोषक सेहो। दलित-शोषित मानवक पक्षधर, साम्यवादक स्वर 'यात्री'क काव्यमे प्रायः ठाम-ठाम भेटैछ। हिनक पहिल काव्य-संग्रह 'चित्रा'मे विविध विषयक अट्ठाइस (28) गोट कविता संकलित अछि। हुनक ई काव्य संग्रह तात्कालिक मिथिलाक सांस्कृतिक विद्रूपताकेँ अंकित करबामे सफल भेल। समाज आ' संस्कृतिक एहन बेछप ओ कारुणिक चित्रकेँ उपस्थापित करबाक ओएह उचित समय छल जखन मैथिलजन समाज सुधारक प्रक्रियामे चलि रहल छल। आ' साहित्यकारलोकनि समकालिक अन्य भाषा-साहित्यसँ प्रेरणा ग्रहण करैत देखल जा रहल छलाह। यात्रीजी सेहो देशक आन-आन भागक सामाजिक व्यवस्थासँ प्रभावित ओ प्रेरित भ' अपना समाजक उन्नतिक हेतु प्रतिबद्ध भेलाह आ' लिखब शुरू कयलनि।

'यात्री'जी जखन बौद्ध भिक्षुक रूपमे श्रीलंका जाय लगलाह तँ 'अन्तिम प्रणाम' शीर्षक कवितामे स्वयं मातृभूमिक परित्यागक निर्णयपर करुणार्द्र होइत लिखैत छथि-

हे मातृभूमि, अंतिम प्रणाम!
अहिबातक पातिल फोड़ि-फाड़ि
पहिलुक परिचय के तोड़ि ताड़ि
पुरजन-परिजन सभके छोड़ि-छाड़ि
हम जाय रहल छी आन ठाम
माँ मिथिले, ई अंतिम प्रणाम!"2"

समाजमे व्याप्त संकीर्ण दृष्टिकोण आ' संकुचित विचारकैं देखि कवि खिन्न भेलाह आ' 'मैथिल' शब्दक एक व्यापक अर्थ प्रस्तुत कयलनि। हुनका मिथिलाक सांस्कृतिक पहिचानकैं बचयबाक रहनि। प्राचीन मान-सम्मानकैं प्राप्त करयबाक छलनि। तैं भिन्न-भिन्न जातिमे विभक्त फराक-फराक विचार ओ मान्यताकैं आगू बढ़ा रहल विद्वेशपूर्ण परिवेशक निर्माण कयनिहार आ' ताहि पाँकमे फँसि मिथिलाकैं अहित करयवला क्षति पहुँचाबयवला समाजकैं 'वन्दना' शीर्षक कविताक माध्यमसँ चेतओलनि आ' स्पष्टतासँ बुझओलनि-

मिथिलाक माटि पर बसनिहार...
सरिपहुँ सभ केओ मैथिले थिक
दुविधा कथीक संशय कथीक?"3"

कवि जनसामान्यक हेतु बोधगम्य भाषामे सामयिक परिस्थितिक चित्रण करैत छथि, जतय हिनक हृदयक भाव सरल, सहज, स्वाभाविक तथा ठेठ मैथिलीक संग मिलि क' कविताकैं हृदयस्पर्शी बना दैत अछि। ओ सामान्यजनकैं कामकाजी लोकक संग चलबाक आवाहन करैत छथि। एहि वैज्ञानिक युगमे जनसमुदायकैं भाग्यक भरोसे चलबाक पारम्परिक सोचसँ मुक्त रहबाक विचार दैत छथि। जे हुनक कवितामे तेहने आपामरक हेतु स्नेह आ' उपादेय वस्तु सेहो बनि गेल अछि। जकरा 'द्वन्द्व' शीर्षक कवितामे देखल जाय-

आधुनिक विज्ञानसँ यदि बढ़ि
तोरा बुझि पड़हु एकादशी-महात्म्य
छपइ छइ अकबारमे किच्छु सभटा फूसि
ई बुझि फाड़ि जाह 'मिथिलामिहिर'
आँचे पजारक होहु तोरा म'न तखन
तो घुरि जाह गामहि।"4"

उपेक्षित ओ अन्नसँ आँट भेल जन-जनक भावनासँ आहत कवि अपन काव्य-गुणक निवेदन करबामे जहिना संस्कृत शब्दावली ओ अलंकारक परित्याग क' देने छथि, तहिना व्यञ्जना उपस्थित करबाक हेतु सेहो संस्कृतक प्रसंगकैं सर्वथा परित्याग क' देने छथि। यात्रीजी ठेठ देहाती जीवनक विषाद, विषमता, दुःख-दारिद्र्य, कालुष्यकैं सरल-सहज भाषामे व्यक्त कयने छथि। तैं हिनक कवितामे वाह्याडम्बरक स्थान नहि रहैछ। नारी मनक आरोह-अवरोहक, घुटन ओ कुंठाक, दुख-दैन्य-पीड़ा ओ आकांक्षाक जेहन चित्र आलोच्य कवि उपस्थापित कयने छथि, अनत' दुर्लभ अछि। तकर मुख्य कारण अछि जे कवि एहन विषम स्थितिक प्रत्यक्ष अनुभूति अपन परिवार ओ समाजमे कयलनि। अनमेल विवाह, बहुविवाह, काटर-प्रथा, कुलीनता ओ पाँजि-पाटिक गछारमे पड़ल मिथिलाक नारी ओ तकर समस्या बेसम्हार भेल जा रहल छल। झूठ, आडम्बरयुक्त जीवन शैली एहिठामक जखन परिचिति बनल जा रहल छलैक, ताही स्थितिमे कवि यात्रीजीक मानस चेतना एक टा स्वरूप ग्रहण कयलक। आ' ताही द्रवित भावक अंकन हुनक निम्न कविताक अंशमे परिलक्षित होइछ-

छुच्छ कोर, आँखिमे अछि नोर भरल
ने देखल ककरो एहेन कर्म जरल
मनमे उठत रहइए स्वाति

जो रे राक्षस जो रे पुरुषक जाति।"5"

दलित वर्गक क्लेश एवं मर्मान्तक पीड़ाक जाहि योग्यताक संग 'यात्री'जी निवेदन कयलनि अछि ताहिसँ बेसी प्राय: आन केओ नहि क' सकलाह। जँ कोनो ठाम हिनक कथन अतिरञ्जित भैयो गेल छनि तँ कतहु नहियो, मुदा सभक पाछाँ विश्वासक प्रामाणिकते भेटैछ। देश मजूरवर्गक कान्हक भरोसे आगाँ बढ़ि रहल अछि। ओकर क्षमता आ' तटस्थतापर सन्देह करब मानसिक पाप होयत। ओकर दिन-रातिक अथक परिश्रमक बदौलति देश विभिन्न क्षेत्रमे विकासक पथपर अग्रसर अछि। मुदा विडम्बनापूर्ण स्थिति तखन उत्पन्न भ' जाइछ जखन ओही मजूरवर्गक संग अन्याय, अत्याचार ओ अधिकार-हननक घटनासभ घटित होइत रहैछ। ओकर हकमारी होइत देखैत रहि जाइछ-

जिन्दगी भरि जे अमृत मंथन करए
जिन्दगी भरि जे सुधा संचित करए
ओ पियासे मरि रहल अछि ओकरे
अमृत पीबासँ जगत बंचित करए।"6"

सामान्यतया 'चित्रा' ओ 'पत्रहीन नग्न गाछ' कविक दू नवीन आयामक सूचना दैछ, मुदा दुहूमे कोनो विशेष भिन्नता दृष्टिगोचर नहि होइछ। 'चित्रा'मे जँ शब्द-शिल्प ओ भावक व्यञ्जना सरल, स्फीत, प्राञ्जल ओ संवेगात्मक छैक, तँ 'पत्रहीन नग्न गाछ'क अधिकांश कविता व्यंग्य वक्रताक कारणे तीक्ष्ण ओ नवीनता लेने अछि। अकाली प्रकृतिक वर्णन करैत कवि 'पत्रहीन नग्न गाछ'क शीर्षक 'सुखैल टटैल एकटा वेङ्ग'मे धरतीक दयनीय दशाकेँ देखबैत छथि-

सुखबैल-टटैल एकटा बेङ्ग
दराड़ि सँ आएल ऊपर
रहि गेल तकैत आकाश दिस
पसरल छलइ लग-पासमे
शुष्क-नीरस क्षत-विक्षत भूमि
शून्यप्राय प्रान्तर
सहस्त्रधा विदीर्ण वातावरण वइसक्खा,
दारुण निर्लिप्त,
सूर्यक मध्याह्नोत्तर प्रखरताप।"7"

आलोच्य कवि प्रकृतिक मनोहर रूपक चित्रण करबाकाल अनुपम कलाकारिताक निदर्शन करबैत छथि। तहिखन पाठककेँ किछु कालक लेल प्रकृतिअहिमे हेरा जयबाक अनुभूति कराय दैत छथि।
एहिना साओन मासक चित्रात्मक वर्णनक प्रसंग ओहिमे वर्णित मिथिलाक व्यवहार-वैभवकेँ निम्नांकित पदमे देखल जा सकैछ-

कान पाथिकँ सुनब पहर भरि
गाबथु प्रौढ़ा लोकनि मलार
भीजब हम भरि पोख पहर भरि
बदरा बरसो मुसलधार।"8"

'पत्रहीन नग्न गाछ'क अधिकांश कवितामे प्रकृतिक सरल सुन्दर वर्णन भेल भेटैत अछि। प्रथम चित्रमे साओनक भरल सर-सरिता, विजुल्लता, भगजोगनी तथा मेघराजकेँ ठनकबामे एक टा रूपक मात्र चित्रित अछि। दोसर ठाम भीजल-तीतल, धोआयल-नहायल वा सिमसिमाह साओनक मोदप्रियताक ललित वर्णन, विधुरक हेतु अगिलगाओन राधिकादि तरुणी सभकेँ पिछड़ि खसबाक कारणे साओन, मधुश्रावणीमे नवतुरियाक हेतु चुमाओन मासक रूपमे भेल अछि। तेसर ठाम साओनक झूलाक वर्णन, चारिम ठाम आंचलिक संस्कृतिक छवि ओ अन्तिम चित्रमे कृषि कर्मक प्रधानताक कारणे साओनक अभ्यर्थना कयल गेल अछि। 'कने-कने मध्यान्तर दैत' शीर्षक कवितामे कवि अन्त-श्रावणक चित्रण करैत कमतिया ओ जन-मजूरनीक सर्वाङ्ग भिजयबाक दृश्य उपस्थित करैत छथि। वर्षाक कारणे रिक्शावलाक कार्य बंद भ' जयबाक आशंका तँ कतहु लोकक कतबाहिमे अर्द्धदग्ध उपरफाँटू कोयला बिछैत आयत आँखिवाली संथाली छौंड़ीक उपराग सेहो बिसरैत नहि छथि।

एतावता कविताक मूल स्वर व्यंग्यात्मक भ' गेल छैक। अतः शिल्प ओ वस्तुबोध दुहू दृष्टिसँ प्रस्तुत काव्य यात्रीजीक उत्कृष्ट रचनामे परिगणित कयल जायत।

कवि पसेनाक गुण-धर्मकेँ परखैत छथि। ओ मिथिलाक गाममे खाली कंकाले-कंकाल देखैत छथि, शिशु-तरुण-तरुणी, वृद्ध-वृद्धा ओ ननकिड़बीक कारी-पिण्डश्याम आकृतिक कंकाल, दू-मुट्ठी अन्न-वेत्रेक मालगोदाम लग भरि-भरि आँजुर धूरा उठबैत कंकालक चित्र प्रस्तुत करबामे अद्वितीय छथि। मिथिला आर्थिक रूपेँ कहियासँ दुर्वलताक आखेट बनल आबि रहल अछि तकर जनतव प्राप्त करब संभव नहि अछि। गरीबी एहि ठामक परिचिति बनि क' रहि गेल अछि। एहन धार्मिक ओ आध्यात्मिक उन्नतिशील मिथिलाक पवित्र धरतीक ई सर्वाधिक सोचनीय ओ विमर्श करबा योग्य विषय भ' गेल अछि। एहन विडम्बनापूर्ण स्थितिमे कविकेँ परम्परासँ संघर्ष करब आवश्यक भ' जाइत छनि आ' ओ अन्ततः देवतोकेँ नहि छोड़ैत छथि-

नहि नबते तोरा खातिर
किन्नहु हमर माथ
पाथर भेलाह तो सरिपहुँ
बाबा बैदनाथ।"9"

पाश्चात्य संस्कृति-सभ्यताक थाल-कादो भारतीय ललनाक शालीनताकेँ लेभारि रहल अछि। कविजी प्रेमक रंगमे रंगल युवतीकेँ राधिका आ' प्रतीक्षारत युवककेँ बाँके बिहारी लालक संज्ञा देने छथि। एक ठाम कवि उच्छृंखल युवक-युवतीमे उन्मुक्त काम-विलासक हेतु प्रस्तुत होयबाक कमनीय चेष्टाकेँ प्रतीक रूपमे प्रयोग क' अद्भुत व्यंग्यक समावेश क' देलनि अछि। जीवनक आपाधापीमे मनुष्य कखन कोना अपनहि लोक आ' समाजमे हेराय जाइत अछि, अपिरिचित होमय लगैछ, तकर व्यंग्य-चित्रसभ काव्य-रचनाक विषय बनल अछि। लक्ष्यहीन, चरित्र विहीन ओ सामाजिक निर्पेक्षतासँ

बहरायल युवा पीढ़ीकेँ चेतौनी दैत रहब साहित्यिक ध्येय बुझलनि यात्रीजी। तेँ एहि भावपरक कतोक महत्वपूर्ण काव्यक सृजन करैत रहलाह।

आधुनिक समाज वैज्ञानिक विकासक संगहि-संग लोक जीवनक कृत्रिमता दिस विशेष झुकल जा रहल अछि। समस्त प्राकृतिक व्यवस्थाक रहस्योद्घाटन करबाक क्रममे ओकर रक्षा नहि क' तकर दोहनक कुत्सित काज करैत रहबाक करुण भावकेँ रचनाक माध्यमसँ देखयबाक सफल प्रयास कयलनि अछि। मनुष्यक समीपता प्रकृतिक संग नहि रहि पायब ओकर विवशता वा अनास्था जे होअय, मुदा प्लास्टिक ओ बिजलीसँ निर्मित नित नूतन चीज-वस्तुक उपलब्धिक कारणे हमरालोकनिक जीवन प्रकृतिक अधीन नहि रहल, सएह भाव हुनक कवितामे अभरैत अछि। कविक व्यंग्य-वाण ताहूपर चललनि-

प्लास्टिकेक फूल
रंग बेश चटकदार
गंध मुदा बीभत्स-
रासायनिक मिक्श्चर केर सरलाहा काटि सन!
कोना क' कोनो देवी होइती अनुकूल,
सूघि सूँघि क' ई फूल?"10"

प्रकृति-प्रेमक संग-संग आधुनिकताक आवेसी 'यात्री' एहि कवितामे अपन उभय गुणक समन्वित रूप देखओलनि अछि। आलोच्य कवि पारम्परिक आडम्बरयुक्त समाजक एक दिस विरोधमे ठाढ़ भेटैत छथि, तँ दोसर दिस 'पत्रहीन नग्न गाछ'क माध्यमसँ प्रगतिशील व्यवस्थाक संपोषक रूपमे। पूर्वसँ चलैत आबि रहल ओहन व्यवस्था जे समाज-संगठनमे, आपसी नेह-छोहमे अवरोधक बनल रहल, यात्रीजी अपन रचनाक माध्यमसँ तकरा समाजक समक्ष अनलनि। माने अपना द्वारा निर्मित व्यवस्थाक कुपरिणामकेँ भोगबाक लेल बाध्य समाजकेँ एना देखओलनि। अर्थात् थाल-कादो मिश्रित बाढ़िक पानिमे भँसिआयल जाइत मैथिल समाजकेँ ओकर कुपथगामितासँ परिचिति करयबामे यात्रीजी नित्य नव-नव रचना क' अग्रगण्य भेलाह। तँ दोसर दिस स्त्री-शिक्षा आ' चौमुखी विकासक पक्षधर होयबाक सद्य: प्रमाण सेहो रचनाहिक माध्यमसँ दैत रहलाह। हुनक विशिष्ट काव्यकृति 'पत्रहीन नग्न गाछ'क 'कइये देलकइ गोल' शीर्षक कवितामे क्षणस्पन्दी कार्य-व्यापारक एक-एकटा क्षण अंकित भेटैत अछि-

हाँजक हाँज छौंड़ी सभ
खेलाइत अछि बास्केट बॉल
चउरंगीक रमना...सुविस्तृत मैदान...
रविक जड़काला...देखइछी फुर्तीबाज
तरुणीवृन्दक क्रीड़ा-कौतुक..., आदि।"11"

निष्कर्ष :

उपरोक्त वर्ण्य-विषयक विवेचनसँ ई सिद्ध भ' जाइछ जे 'यात्री'क साहित्यिक रचना-संसार समसामायिक जनजीवनक चित्रकेँ ठोस रूपेँ अभिव्यक्त करैत अछि। एहिमे प्रखर यथार्थ-बोध, धरती ओ जन-जनक प्रति अनन्य प्रेम, आस्था एवं विश्वाससँ आद्यन्त मण्डित अछि। युगक शोषण, स्वस्थ एवं स्वतंत्र जीवन हेतु संघर्षरत मनुष्यक चित्रण तथा अपन माटि-पानिक गंध, ग्राम्य ओ नागरिक जीवनक विषमताक बीच स्वस्थ-सबल प्रकृति आदि वस्तुतः सामाजिक यथार्थक प्रशस्त संवेदनाक परिचायक थिक। कवि यात्रीक किछु कवितामे निम्नवर्गीय संघर्षशील आम-जनक चेतना सेहो प्रकट भेल अछि। महाजनी चट्टानसँ ठोकर खाइत, भयंकर संघर्षक आगिमे झरकैत सर्वहाराकेँ समर्थन दैत 'यात्री'क कविता साम्राज्यवादी संस्कृतिक विनासक प्रयासकेँ जेना ललकारा दैत अछि। वस्तुतः कवि 'यात्री' अपन काव्य रचना-संसारमे स्वयंकेँ सर्वहारा वर्गक हेतु अनलनि, तेँ ओ सर्वहाराक कवि छथि। आजुक समयमे जाहि व्यवस्थाकेँ सामाजिक न्यायक अन्तर्गत राखल जाइत अछि, तकर पक्षकार यात्री सय वर्ष पूर्वहि बिगुल फूकि आयल छलाह। माने स्वतन्त्रतासँ पहिनहि। तेँ आइयो हुनक समस्त साहित्यिक कृति प्रासंगिक अछि। मिथिलाक भूमि-भाषा आ' जनताक प्रति अनन्य अनुरागी कविजी विभिन्न रचनाक माध्यमसँ एहि ठामक सामाजिक एकता अखण्डता ओ सांस्कृतिक चेतनाक प्रति सजग रहैत ओकर संवाहकक रूपमे अपन परिचिति सुस्थापित कयलनि। नारी मनक अन्तर्कलह, विषाद, हाहाकार, शून्यता ओ द्वन्द्वकेँ स्पष्टतासँ उद्घाटित कयनिहार कवि यात्रीजीक कतोक कविता भाव ओ शिल्पक दृष्टिसँ अत्यन्त महत्वपूर्ण रहल अछि।

संदर्भ सूची :

1. श्रीयात्री, चित्रा : 1357 साल, मिश्र जयकान्त (भूमिका), प्रयाग, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति; पृ.-2

2. ओएह; पृ.-4

3. ओएह; पृ.-66

4. ओएह; पृ.-57

5. ओएह; पृ.-15

6. ओएह; पृ.-8

7. यात्री, पत्रहीन नग्न गाछ : 1969 इ०, पटना/इलाहाबाद, यात्री प्रकाशन; पृ.-13

8. ओएह; पृ.-37

9. ओएह; पृ.-22

10. ओएह; पृ.-46

11. ओएह; पृ.-52